

* आधिहरि

हरौ इति

→

हरि के अधीन → अत्यंत विभक्ति सूत्र से

विभक्ति अर्थ में।

* उपकृष्णम्

कृष्णस्य समीपम्

→

कृष्ण के समीप → समीप अर्थ में

* सुभद्रम्

मद्राणां समृद्धिः

→

मद्रों की समृद्धि → समृद्धि अर्थ में

* दुरक्षिप्तम्

राक्षसाणां व्युद्धिः

→

राक्षसों की अवनीति → मुहि अर्थ में

* निर्दोषः

दोषाणाम् अभावः

→

दोषों का अभाव → अभाव अर्थ में

* अतिहिंसम्

हिंसस्य अत्यम्

→

हिंस का नाश हो जाने → अत्यय (नाश) अर्थ में

* अतिनिद्रम्

निद्रासम्प्राप्ति न मुञ्चते

→

निद्रा के अनुत्थित → अनुत्थित अर्थ में

पर

समय में

* इतिहरि

हरिशब्दस्य प्रकाशः

→

हरि शब्द का अर्थ से → प्रकाश अर्थ में

उच्चारण

* अनुकृष्णम्

कृष्णस्य पश्चात्

→

कृष्ण के पीछे → अश्नात् अर्थ में

* अनुरूपम्

रूपस्य योग्यम्

→

रूप के योग्य → अपार्थ योग्यता अर्थ में

* प्रत्येक

एकम् एकं प्रति

→

प्रति एक → प्रत्येक वीक्ष्य अर्थ में

* यथाशक्ति

शक्तित्वम् अनतिक्रम्य

→

शक्ति के अनुसार → अनतिक्रम्य अर्थ में

* सन्तुणम्

तृणम् अपि उपरित्यज्य

→

तिनके को भी न छोड़कर → स्थाकल्य अर्थ में

* अनुविष्णु

विष्णोः पश्चात्

→

विष्णु के पीछे → पश्चात् अर्थ में

आङ्मर्यादाभिर्विधौ: अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक)

के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है।

जैसे -

→ आ मरणात् = आमरणम् (मरने तक)

→ आ जीवनात् = आजीवनम् (जीवन भर)

नदीभिश्च → नदी वाली शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

जैसे →

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम्
(पाँच गङ्गाओं का समाहार)

→ द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम्
(दो यमुनाओं का समाहार)

→ सरतानां नर्मदानाम् समाहारः = सरतनर्मदम्

अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः → अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से

समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे -

→ शरदः समीपम् = उपशरदम् (शरद् के समीप)

→ विपाशं विपाशं प्रति = प्रतिविपाशम्

(विपाशा नदी के सम्मुख)

अनश्च → जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है। वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। इससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे -

→ राज्ञः समीपम् = उपराजम् (राजा के समीप)

नपुंसकादन्यतरस्याम् → 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास

के अन्त में विकल्प से 'एच्' प्रत्यय होता है। जैसे - (33)

- चर्मणः समीपम् = उपचर्मम् (चर्म के समीप) 'एच्' प्रत्यय हुआ।
 → चर्मणः समीपम् = उपचर्म (चर्म के समीप) 'एच्' नहीं हुआ।

2- तत्पुरुष समास

'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधान : तत्पुरुषः'

अर्थात् जिस समास में उत्तरपद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदाहरणतया - 'गंगा जलम् आनय'। यहाँ आनय इस क्रियापद के साथ जल का ही साक्षात्

सम्बन्ध होता है, अतः यहाँ 'जल' इस उत्तर पद का अर्थ ही प्रधान है। अतः यहाँ तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के मुख्य रूप से दो भेद हैं

① व्याधिकरण तत्पुरुष ② समानाधिकरण

व्याधिकरण तत्पुरुष समास

⇒ जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्याधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

तत्पुरुष
(कर्मधारय समास इसी को कहते हैं)

व्याधिकरण तत्पुरुष के 6 भेद किये गये हैं -

- ① कर्मकारक द्वितीया तत्पुरुष
- ② करण तृतीया तत्पुरुष
- ③ सम्प्रदान चतुर्थी तत्पुरुष



- ④ अणायान पंचमी तत्पुरुष
- ⑤ सम्बंध षष्ठी तत्पुरुष
- ⑥ अधिकरण सप्तमी तत्पुरुष

अर्थात् प्रथम पद जिस विभक्ति का है व.ह. उसी विभक्ति से सम्बन्धित तत्पुरुष कहा जाएगा। जैसे -

क - कर्मकारक द्वितीया तत्पुरुष → इस विभक्ति का चिह्न 'को' है, जो दिया हुआ है।

सामासिक पद

विग्रह

अर्थ

- गजं आरुढः → गजम् आरुढः → हाथी पर आरुढ
- सुखप्राप्तः → सुख प्राप्तः → सुख को प्राप्त हुआ
- स्वर्गगतः → स्वर्गगतः → स्वर्ग को गया हुआ
- रामाश्रितः → रामम् आश्रितः → राम के आश्रित

ख - करण कारक तृतीया तत्पुरुष → इस विभक्ति का चिह्न 'से' के द्वारा है।

- हरिनातः → हरिणा नातः → विष्णु से रक्षा किया गया
- नखभिन्नः → नखैः भिन्नः → नखों से काटा हुआ
- विद्याहीनः → विद्याहीनः → विद्या से हीन
- मातासदृशः → माता सदृशः → माता के समान
- नेत्रहीनः → नेत्राभ्याहीनः → नेत्रों से रहित

ग - सम्प्रदान कारक चतुर्थी विभक्ति → चिह्न 'के लिए' है।

- गोहितम् → गोभ्यः हितम् → गायों के लिए हित
- मूपदारुः → मूपाय दारुः → मूप के लिए दारु
- सुखार्थम् → सुखाय इदम् → सुख के लिए
- भक्ताप्रियः → भक्तेभ्यः प्रियः → भक्तों के लिए प्रिय
- गुरुदक्षिणा → गुरवे दक्षिणा → गुरु के लिए दक्षिणा

घ - अपादान कारक पंचमी विभक्ति → चिह्न 'से' है।

(35)

चौरभयम् → चौरात् भयम् → (चोर से भय)
 बन्धनमुक्तः → बन्धनात् मुक्तः → (बन्धन से मुक्त)
 वृक्षपातितः → वृक्षात् पतितः → (वृक्ष से गिरा हुआ)
 दूरादागतः → दूरात् आगतः → (दूर से आया हुआ)
 मार्गभ्रष्टः → मार्गात् भ्रष्टः → (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)

च - सम्बन्ध कारक षष्ठी विभक्ति - का, की, के, रा,
 री, रे।

सीतापतिः सीतायाः पतिः (सीता का पति)
 राजपुरुषः राजः पुरुषः (राजा का पुरुष)
 नन्दनन्दनः नन्दस्य नन्दनः (नन्द का नन्दन)
 रामानुजः रामस्य अनुजः (राम का अनुज)
 गोसेवा गोः सेवा (गाय की सेवा)

छ - अधिकरण कारक सप्तमी विभक्ति - चिह्न 'में' है।

नरोत्तमः नरेषु उत्तमः (नरों में उत्तम)
 गुरुभक्तिः गुरौ भक्तिः (गुरु में भक्ति)
 कलानिपुणः कलासु निपुणः (कलाओं में निपुण)
 पुरुषोत्तमः पुरुषेषु उत्तमः (पुरुषों में श्रेष्ठ)
 कार्यकुशलः कार्ये कुशलः (कार्य में कुशल)
 मुनिश्रेष्ठः मुनिषु श्रेष्ठः (मुनियों में श्रेष्ठ)

नञ् तत्पुरुष समास

जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहां नञ् समास होगा।

⇒ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वर वर्ण

आगे तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है।
जैसे. (36)

- न स्वस्थः = अस्वस्थः (बीमार)
→ न अश्वः = अनश्वः (घोड़ा नहीं)

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह

सामासिक पद

(अर्थ सहित)

- न कृतम् = अकृतम् (जो किया न हो)
→ न इच्छा = अनिच्छा (इच्छा न हो)
→ न आगतम् = अनागतम् (जो आया न हो)
→ न गजः = अगजः (जो गज न हो)
→ न उक्तः = अनुक्तः (जो उक्त न हो)
→ न मोघः = अमोघः (अव्यर्थ)
→ न सिद्धः = असिद्धः (असफल)

③ कर्मधारय समास

सूत्र → 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'

इसमें पहला पद विशेषण तथा द्वितीय पद संज्ञा या सर्वनाम में से वह विशेष्य होता है। कर्मधारय समास 4 रूपों में विभक्त है -

- ① विशेषण पूर्व पद कर्मधारय
- ② उपमान पूर्व पद कर्मधारय
- ③ रूपक कर्मधारय
- ④ उभयपद विशेषण कर्मधारय



DEEPAK SINGH RAJPOOT

(अ) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय - यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होगा है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। (37)

उदाहरण →

- मधुरफलम् मधुरं च तत्फलम् (मधुर जो फल)
- नीलौत्पलम् नीलं च तत् अपलम् (नील कमल)
- नीलाकाशः नीलः आकाशः (नीला आकाश)
- महाराजः महान् भासौ राजा (महान् राजा)
- महादेवः महान् भासौ देवः (महादेव)

(ब) उपमान पूर्वपद कर्मधारय - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। उदाहरण →

- घनश्यामः घन इव श्यामः [मैं घन उपमान तथा श्यामवर्ण (बादल के समान काला) साधारण धर्म हैं।]
- नरसिंहः नरः इव सिंहः (मनुष्य सिंह के समान)
- कमलकोमलम् कमलम् इव कोमलम् (कमल के समान कोमल)

(ग) रूपक कर्मधारय - उपमान और उपमेय के स्वरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं।

उदाहरण →

- ज्ञानाग्नि ज्ञानम् स्वं अग्नि (ज्ञान रूपी अग्नि)
- मुखकमलम् मुखमेव कमलम् (मुख रूपी कमल)
- परीक्षापयोधिः परीक्षा स्वं पयोधि (परीक्षा रूपी सागर)
- विद्याधनम् विद्या स्वं धनम् (विद्या रूपी धन)

(घ) उभयपद विशेषण कर्मधारय → इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं।

- श्वेतकृष्णः श्वेत चासौ कृष्णः श्वेत और काला
- चरान्तरम् चरं च अन्तरम् च चरान्तरः
- सुप्तोत्थितः पूर्वम् सुप्तः पश्चात् उत्थितः पहले सोया फिर उठा।

(५) द्विगु समास

सूत्र - "संख्यापूर्वो द्विगुः" / जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है।

नियम → कभी-कभी द्विगु समास का समस्तशब्द स्त्रीलिंग भी होता है और स्त्रीलिंग में 'ई' का प्रयोग करते हैं; जैसे - अष्टाध्यायी।

अपवाद - कभी-कभी स्त्रीलिंग में 'आ' भी लगता है, जैसे - पञ्चखट्वा।

⇒ इस समास में विग्रह करने पर दोनों पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है और अन्त में 'समाहारः' पद जोड़ते हैं।

सामासिक पद

समास विग्रह

अर्थ

- पञ्चगवम् पञ्चानां गवां समाहारः (पाँच गावों का समूह)
- पञ्चवटी पञ्चानां वटानां समाहारः (पाँच बटों / वृक्षों का समूह)
- पञ्चपात्रम् पञ्चानां पात्राणां समाहारः (पाँच पात्रों का समूह)

- (35)
- पञ्चामृतम् पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः (पाँच जमूनों का समूह)
 - पञ्चदिनम् पञ्चानां दिनानां समाहारः (पाँच दिनों का समूह)
 - त्रिलोकी त्रयाणां लोकानां समाहारः (तीन लोकों का समाहार)
 - त्रिभुवनम् त्रयाणां भुवानानां समाहारः (तीन भुवनों का समाहार)
 - चतुर्फलम् चतुर्णां फलानां समाहारः (चार फलों का समाहार)
 - अष्टादश्यामी अष्टानाम् अष्टादश्यानां समाहारः (आठ अष्टमियों का समाहार)
 - त्रिफला त्रयाणां फलानां समाहारः (तीन फलों का समाहार)
 - शताब्दी शतानाम् अब्दानां समाहारः (सौ वर्षों का समूह)
 - चतुर्भुजम् चतुर्णां भुजानां समाहारः (चार भुजाओं का समाहार)
 - त्रिवेणी तिसृणां वेणीनां समाहारः (तीन वेणियों का समूह)
 - चतुर्युगम् चतुर्णां युगानां समाहारः (चार युगों का समूह)
 - सप्तशती सप्तानां शतानां समाहारः (सप्त सैकड़ों का समूह)
 - सप्ताहः सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः (सात अहों / दिनों का समूह)
 - नवरात्रम् नवानां रात्रीणां समाहारः (नव रात्रियों का समूह)

(5) द्वन्द्व समास

सूत्र → "उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः"

⇒ जिस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद प्रधान होते हैं, द्वन्द्व समास कहलाता है। यह समस्त पद प्रधान समास है। इसमें 'च' से दो या दो से अधिक संज्ञाओं को जोड़ा जाता है।

→ द्वन्द्व समास के मुख्य रूप से तीन भेद हैं:-

- ① इतरेतर द्वन्द्व
- ② समाहार द्वन्द्व
- ③ एकशेष द्वन्द्व

(i) इतरेतर ङ्ग → इसमें दोनों पदों का अपना अलग-अलग अस्तित्व होता है, वहाँ इतरेतर ङ्ग होगा है। जैसे - 'रामलक्ष्मणों' में

राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है।

- सीतारामौ सीता च रामश्च सीता और राम
- मातापितरौ माता च पिता च माता और पिता
- पार्वतीपरमेश्वरौ पार्वती च परमेश्वरश्च पार्वती और परमेश्वर

(ii) समाहार ङ्ग → इसमें पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार का बोध कराते हैं, इसे समाहार ङ्ग कहते हैं।

- पाणिपादम् पाणी च पादौ च / तेषां समाहारः हाथ और पैर
- अद्यौरात्रम् अद्यः च रात्रि च रात और दिन
- गद्यकाव्यम् गद्यं च काव्यम् च गद्य और काव्य

(iii) सकशेष ङ्ग → जिस ङ्ग समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद

शेष रहता है उसे 'सकशेष ङ्ग' समास कहते हैं।

- पितरौ माता च पिता च माता और पिता
- ब्राह्मणौ ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी और ब्राह्मण
- मयूरौ मयूरी च मयूरः च मयूरी और मयूर
- दुहितरौ दुहिता च दुहिता च दो पुत्रियां
- युवानौ युवा च युवती च युवक और युवती
- रामौ रामश्च रामश्च दो राम

सूत्र - "अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः"

जिस समास में दोनों पद अप्रधान हो तथा अन्य पद प्रधान होता है अर्थात् दोनों पद अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ को प्रकट करें, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

सामासिक पद

समास विग्रह

अर्थ

- पीताम्बरः पीतम् अम्बरं यस्य सः पीले वस्त्र वाला
(श्रीकृष्ण)
- लम्बोदरः लम्बम् उदरं यस्य सः लम्बा है उदर जिसका
(गणेश)
- नीलकण्ठः नीलं कण्ठं यस्य सः नीला है कण्ठ जिसका
(शिव)
- श्वेताम्बरः श्वेतम् अम्बरं यस्य सः सफेद है वस्त्र जिसका
(साधु)
- दामोदरः दामम् उदरं यस्य सः रस्सी है उदर पर जिसके
(श्रीकृष्ण)
- चतुराननः चत्वारि आननानि यस्य सः
(ब्रह्मा)
- यशोधनः यशः स्वं धनं यस्य सः यश ही है धन जिसका
(राजा)
- चन्द्रशेखरः चन्द्रः शेखरे यस्य सः चन्द्र है शिखर पर जिसके
(शिव)
- गजाननः गज स्वं काननं यस्य सः हाथी के समान मुख जिसका
(गणेश)
- जितेन्द्रियः जितानि इन्द्रियाणि येन सः जीत ली है इन्द्रियां जिसने
(मुनि)

उपसर्ग , प्रत्यय

426

उप उपसर्ग पूर्वक 'सृज' धातु से घञ् प्रत्यय करने पर 'उपसर्ग' शब्द निर्मित होता है। जिसका अर्थ है 'जो समीप रखे जाय'।

उपसर्ग की परिभाषा → वे शब्दांश, जो किसी शब्द के आरम्भ में लगाकर उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं, अथवा उसके अर्थ को बदल देते हैं। उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे - परा → पराक्रम, पराजय, पराधीन, पराभूत।

* संस्कृत में उपसर्गों की संख्या 22 है।

* हिन्दी में उपसर्गों की संख्या 13 है।

उपसर्ग → प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, निः, निर, दुः, दुर, वि, आड. (आ), नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रीति, परि, उप।

* उपसर्ग हमेशा धातुओं या शब्दों के पूर्व ही जोड़े जाते हैं। उपसर्ग भी अव्यय पद हैं।

⇒ धातुओं के साथ उपसर्ग लगाने से तीन परिवर्तन सम्भव हैं:

① क्रिया के अर्थ में बदलाव। जैसे - विजयः, पराजयः, अपकारः, उपकारः, आहारः, विहारः।

② क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है।
जैसे - गमनम् - अनुगमनम्।

③ क्रिया के अर्थ में सुधार। जैसे - वसति - अधिवसति।



उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
१ प्र	अधिक, अतिशय, उत्तम	प्रसारः, प्रमाणम्, प्रहारः, प्रकारः
२ परा	विपरीत, पश्चात्, पीछे	पराभवः, पराक्रमः, पराजयः, पराकाष्ठा
३ अप	दूर, करना, निन्दा, बुरा, अभाव	अपराधः, अपमानः, अपकर्षः, अपवादः
४ सम्	साथ, समान, संहार, अच्छा	संस्कार, संहारः, संकल्प, संगतिः
५ अनु	पीछे, समान, साथ-साथ	अनुचरः, अनुभवः, अनुवादः, अनुकूलम्
६ अव	हीनता, नीचे, दूर	अवनतिः, अवतारः, अवसर, अवमानना
७ निस्	रहित, निषेध, बाहर, विपरीत	निष्पाप, निःशङ्कः, निस्सारः, निष्कलंक
८ निर्	निषेध, बाहर, रहित	निर्णयः, निरादरः, निर्गमनम्, निर्बोधः
९ दुस्	बुरा, कठिन, हीन, दुष्ट	दुष्करः, दुस्तरः, दुस्साहसम्, दुस्साध्यः
१० दुर	कठिन, बुरा	दुर्गमः, दुर्लभः, दुराचारः, दुर्व्यवहारः
११ वि	रहित, विपरीत, विशिष्ट	विभोगः, विनयः, विशिष्टः, विगतः
१२ आडः (आ)	तक, पर्यन्त कम	आजन्मः, आजीवनम्, आकर्षणम्, आमरणम्
१३ नि	निषेध, नीचे	निधिः, निवारकः, निधानम्, निवासः
१४ अधि	ऊपर, श्रेष्ठ, विषय में	अध्यक्षः, अधिपतिः, अध्यायः, अधिकारः

15-	अपि	निकट	अविधानम्, अपिनाम्
16	अति	मर्यादा से आगे, बहुत अधिक	अतिमालः, अत्मादरः, अतिगुणः, अत्युत्कृष्टः
17	सु	अच्छा, सुन्दर, बिना श्रम के	सुनाम, सुकरः, सुगमः, सुविचारः, सुकृतम्
18	उत्	ऊपर	उद्गम, उन्नति, उद्भव, उन्नमनम्
19	अभि	ओर, अधिक	अभिमुखम्, अभिज्ञानम्, अभिमानः, अभितः
20	प्रति	समीप, विपरीत, ओर	प्रतिकूलम्, प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षरम्, प्रतिष्ठाः
21	परि	ओर, चारों ओर विरोध	परितः, परीक्षा, परीक्षणम्, परिज्ञानम्
22	उप	समीप, निकट	उपासना, उपवनम्, उपनमनम्, उपासकः

एक से अधिक उपसर्गों के योग से बने शब्द:

(i) वि + अव + हारः = व्यवहारः

(ii) अति + उत् + कृष्टः = अत्युत्कृष्टः

(iii) प्रति + आ + गमनम् = प्रत्यागमनम्

(iv) दुर + वि + अव + हारः = दुर्यवहारः

(v) अनु + सम् + ध्यानम् = अनुसन्धानम् ।

DEEPAK SINGH RAJPOOT

परिभाषा → 'प्रतीयते विधीयते' इति प्रत्ययः। अर्थात् ऐसे शब्दों में जो धातु के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं अथवा सुन्दरता प्रदान करते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे - लिखित : आदि।

प्रत्यय प्रधान रूप से दो प्रकार के होते हैं -

- ① कृदन्त प्रत्यय ② तद्धित प्रत्यय

कृदन्त प्रत्यय → ऐसे प्रत्यय जो धातु के अन्त में जुड़कर संज्ञा, विशेषण, अव्यय शब्द बनाते हैं और जिस धातु के अन्त में 'कृत' प्रत्यय लगा हो। उसे 'कृदन्त' प्रत्यय कहते हैं। जैसे - कृ + तृन् = कर्तृ

तद्धित प्रत्यय - तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण शब्दों के साथ लगाये जाते हैं।
जैसे -

सुन्दरता = सुन्दर + तल् ।

1. क्त और 2 - क्तवतुः

यह दोनों प्रत्यय भूतकाल में प्रयुक्त होते हैं।

क्त प्रत्यय का 'त' और 'क्तवतु' का 'तवत्' शेष रहता है।
क्त प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में होता है।
क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है। 'क्त' प्रत्यय के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं; जैसे -

धातु	अर्थ	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ	(क्रिया)	कृतः	कृता	कृतम्
पठ	(पढ़ा)	पठितः	पठिता	पठितम्
जि	(जीता)	जितः	जिता	जितम्
गम्	(जाना)	गतः	गता	गतम्